गुप्त कलीसिया–7

स्वर्गदूत, दुष्टात्माएं तथा आत्मिक युद्ध

डॉ. डेविड प्लॉट

Part 5

इफिसियों 5:6, "कोई तुम्हें व्यर्थ बातों से धोखा न दे, क्योंकि इन ही कामों के कारण परमेश्वर का क्रोध आज्ञा न माननेवालों पर भड़कता है।"

गलातियों 6:7, "धोखा न खाओ; परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा।"

याकूब 1:16–17, "हे मेरे प्रिय भाइयो, धोखा न खाओ। क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, ओर न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है।"

अतः मसीह का सत्य ज्ञान होना आवश्यक है। दूसरा, हम मसीह में कौन हैं, इसका सच्चा ज्ञान। पौलुस इसके प्रतिवाद में कहता है कि हम मसीह के अनुग्रह से उद्धार पाते हैं। इफिसियों 2:1–3, "उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है। इनमें हम भी सब के सब पहले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर और मन की इच्छाएं पूरी करते थे, और अन्य लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे।"

विचार करें कि हम कौन थे। इफिसियों 2– पाप में मरे हुए। इसकी गंभीरता पर ध्यान दें। हम अन्धकार में वास करते थे। अवज्ञा की सन्तान। पापी लालसाओं के अधीन नरक के लिए निर्धारित। हम क्रोध के पात्र थे।

प्रभु यीशु ने क्या किया? इफिसियों 1:3–14 धर्मशास्त्र का सर्वाधिक उत्तम अंश है, "हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशीष दी है। जैसा उसने हमें जगत की उत्पति से पहले उसमें चुन लिया कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। और अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिये पहले से ठहराया कि

यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों, कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्रिय में सेंत–मेंत दिया। हम को उसमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है, जिसे उसने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत से किया। क्योंकि उसने अपनी इच्छा का भेद उस भले अभिप्राय के अनुसार हमें बताया, जिसे उसने अपने आप में ठान लिया था कि समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे। उसी में जिसमें हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहले से ठहराए जाकर मीरास बने कि हम, जिन्होंने पहले से मसीह पर आशा रखी थी, उसकी महिमा की स्तुति के कारण हों। और उसी में तुम पर भी, जब तुम ने सत्य का वचन सुना जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है और जिस पर तुम ने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी। वह उसके मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिये हमारी मीरास का बयाना है, कि उसकी महिमा की स्तुति हो।"

पिता परमेश्वर ने जगत की नींव डालने से पूर्व ही हमारे उद्धार की योजना बनाई थी– सूरज, चांद, सितारों से पूर्व, पहाड़ों समुद्र से पूर्व ही परमेश्वर ने आपसे प्रेम रखा। उसने पूर्व मे नियत किया कि आपको पुत्र बनाए। अतः पिता ने हमारे उद्धार की योजना बनाई और पुत्र ने अपने लहू के द्वारा हमारा उद्धार किया, पवित्र आत्मा हमारे उद्धार को सुरक्षित रखता है और हमारे अनन्त उत्तराधिकार को निश्चित करता है।

हम मसीह में कौन हैं। हम मसीह से पूर्व क्या थे, परमेश्वर ने क्या दिया और अब हम कौन हैं। अब पौलुस कहता है कि हम उसकी देह कैसे हैं।

इफिसियों 5:23, "क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है और स्वयं ही देह का उद्धारकर्ता है।"

हम मसीह की देह हैं, उसका भवन हैं।

इफिसियों 2:19–22, "इसलिये तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए। और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर, जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है, बनाए गए हो। जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर

बनती जाती है, जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवासस्थान होने के लिये एक साथ बनाए जाते हो।"

हम मन्दिर हैं। हम उसकी दुल्हन हैं–इफिसियों 5:25–27, "हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखा, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया कि उसको वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाए, और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, वरन् पवित्र और निर्दोष हो।"

इफिसियों की कलीसिया से वह कहता है कि हम प्रभु यीशु के अनुग्रह से उद्धार पाते हैं।

हम मसीह के सामर्थ्य से पूर्ण हैं– इफिसियों 1:18–23, में मसीह का अति उत्तम वर्णन है, " और तुम्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान लो कि उसकी बुलाहट की आशा क्या है, और पवित्र लोगों में उसकी मीरास की महिमा का धन कैसा है, और उसकी सामर्थ्य हम में जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है, उसकी शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार जो उसने मसीह के विषय में किया कि उसको मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ्य, और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में पर आनेवाले लोक में भी लिया जाएगा, बैठाया; और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया; और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया, यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।"

मसीह के पास संपूर्ण अधिकार है– कुलुस्सियों 1:19, "क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उसमें सारी परिपूर्णता वास करे।"

वह पुनरुत्थित उद्धारकर्ता है। वह महिमान्वित राजा है। वह स्वर्ग में परमेश्वर के दाहिनी ओर है– सब अधिकार प्रभुता और नामों से बढ़कर। वह परमप्रधान प्रभु है। पौलुस कहता है कि परमेश्वर ने सब कुछ उसके पांवों तले करके उसे शिरोमणि बनाया है। यद्यपि हम, कलीसिया उसके अधीन है परन्तु कलीसिया उसके पांवों तले नहीं है। पौलुस कहता है कि कलीसिया के लिए परमेश्वर ने प्रभु यीशु को शिरोमणि बनाया है। प्रभु यीशु के हाथ में संपूर्ण अधिकार है।

कलीसिया में मसीह की पूर्णता है– कुलुस्सियों 2:9, "क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है।"

यदि कलीसिया में मसीह की पूर्णता है और मसीह के अधीन सब कुछ कर दिया गया है तो संपूर्ण पृथ्वी का अधिकार कलीसिया के हाथ में है– 1 कुरिन्थियों 3:21–23, "इसलिये मनुष्यों पर कोई घमण्ड न करे, क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है: क्या पौलुस, क्या अपुल्लोस, क्या कैफा, क्या जगत, क्या जीवन, क्या मरण, क्या वर्तमान, क्या भविष्य, सब कुछ तुम्हारा है, और तुम मसीह के हो, और मसीह परमेश्वर का है।"

भाइयों और बहनों हम पाप के शिकार नहीं, पाप पर जयवन्त हैं। हम अन्यजाति संस्कृति में दुर्बल नहीं है, हम आत्मिक युद्ध में दुर्बल नहीं हैं। हम बलवन्त हैं।

हमारे हाथ में सब अधिकार हैं। अब हम मसीह की महिमा प्रकट करते हैं। इफिसियों की पत्री का वर्णन परमेश्वर के हथियारों की ओर ले चलता है। हम मसीह की महिमा का प्रकाशन करते हैं। परमेश्वर की योजना है कि उसके पुत्र की देह, कलीसिया द्वारा संसार को अपने पुत्र की महिमा दिखाए। इफिसियों 3:10, "ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का विभिन्न प्रकार का ज्ञान उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो स्वर्गीय स्थानों में हैं, प्रगट किया जाए।"

परमेश्वर कलीसिया द्वारा स्वार्गिक स्थानों के प्रधानों और अधिकारियों पर अपना ज्ञान प्रकट करता है। इफिसियों 6 में इन प्रधानों और अधिकारियों का वर्णन है। परमेश्वर कहता है, "मैं मनुष्यों का उद्धार करूंगा, उन्हें पाप और मृत्यु से जीवन में लाऊंगा। उनका मन परिवर्तन करके उन्हें अपनी महिमा के प्रकाशन के लिए ऊंचा करूंगा।" मैं नरक की शक्तियों से कहूंगा, 'क्या तुम मेरी भलाई देखना चाहते हो? देखो मैं ने इन मनुष्यों के उद्धार के निमित्त क्या किया है।' परमेश्वर कलीसिया के द्वारा स्वार्गिक स्थानों में अपनी महिमा प्रकट करता है।

परमेश्वर कहता है, "कलीसिया को देखा और तुम मेरे पुत्र को देखोगे, उसकी महिमा देखोगे। देखो मैं ने कैसे उसे खरीदा है, उसे बुलाया है, उसका उद्धार किया है और अनन्तकाल के लिए उसे सुरक्षित रखा है।" सत्य का कटिबन्ध अर्थात प्रभु यीशु का सत्य ज्ञान और हम उसमें क्या हैं। इसमें परमेश्वर के साथ सत्यनिष्ठा, स्वयं के साथ सत्यनिष्ठा और अन्यों के साथ सत्यनिष्ठा निभाना है। मसीह कौन है और हम मसीह में क्या हैं, इसकी यथोचित समझ।

धार्मिकता की झिलम

धार्मिकता हमें दी गई है। यह धार्मिकता हमारी नहीं है। शैतान हमारे मन में डालता है कि हम स्वयं ही धर्मी बन सकते हैं। लूका 18:10–13, "दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने के लिये गए; एक फरीसी था और दूसरा चुंगी लेनेवाला। फरीसी खड़ा होकर अपने मन में यों प्रार्थना करने लगा, 'हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि मैं दूसरे मनुष्यों के समान अन्धेर करनेवाला, अन्यायी और व्यभिचारी नहीं, और न इस चुंगी लेनेवाले के समान हूं। मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूं; मैं अपनी सब कमाई का दसवां अंश भी देता हूं।' "परन्तु चुंगी लेनेवाले ने दूर खड़े होकर, स्वर्ग की ओर आंखें उठाना भी न चाहा, वरन! अपनी छाती पीट–पीटकर कहा, 'हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर!'"

पौलुस की पत्रियों में आत्मिक युद्ध दो पक्षीय है– स्थानीय धार्मिकता।

विश्वासी अधिकतर आत्मिक युद्ध में दुर्बल होते हैं क्योंकि वे मसीह में अपने स्थान के प्रति आश्वस्त नहीं हैं। कुलुस्सियों 1:27 में इसका महत्व देखें,

"जिन पर परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है, और वह यह है कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है।"

मसीह महिमा की आशा आप में है अर्थात हमारा जीवन सामर्थी है। कुलुस्से के विश्वासियों को मसीह के विषय झूठी शिक्षा देकर उसकी महानता को कम किया जा रहा था। अतः पौलुस लिखता है, कुलुस्सियों 1:15–20, "वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है। क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुतांए, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं। वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं। वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है; वही आदि है, और मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे। क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उसमें सारी परिपूर्णता वास करे, और उस के क्रूस पर बहे हुए लहू के द्वारा मेलमिलाप करके, सब वस्तुओं को उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले चाहे वे पृथ्वी पर की हों चाहे स्वर्ग में की।"

परमेश्वर का प्रतिरूप, सृष्टि का कर्ता, कलीसिया का सिर, संसार का उद्धारकर्ता।

यदि यह मसीह आपके पास हो तो आपमें गंभीर परिवर्तन आएगा क्योंकि परमेश्वर का प्रतिरूप, सृष्टि का कर्ता, कलीसिया का सिर, संसार का उद्धारकर्ता आपमें अन्तर्वास करता है।

विनिमय का जीवनः यह सच है। उसने हमारे पाप हर लिए। 2 कुरिन्थियों 5:21, "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।"

अब हम उसकी धार्मिकता धारण किए हुए हैं। गलातियों 2:20, "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है; और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिये अपने आप को दे दिया।"

हम मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए हैं और अब हम नहीं मसीह हम में जीवित हैं। वह हमारी मृत्यु लेकर मरा और हम उसका जीवन जी रहे हैं मसीह आपमें अन्तर्वास है।

सुरक्षित जीवनः आपमें अन्तर्वासी मसीह महिमा की आशा है। आत्मिक युद्ध के परिप्रेक्ष्य में मैं चाहता हूं कि आप मसीह में अपनी सुरक्षा पर विचार करें। और कुलुस्से की शिक्षा को ध्यान में रखें। उद्धार पाने पर मसीह ने आपमें अन्तर्वास किया और वह आपमें अंकित हो गया है। वह आपकी धरोहर बन गया है। अब वह आपको छोड़कर कहीं नहीं जाएगा– इफिसियों 1:13–14 यही नहीं पौलुस इससे अधिक चर्चा करता है कि आप मसीह में हैं।

कुलुस्सियों 1:27–28, "जिन पर परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है, और वह यह है कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है। जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें।"

यह तो है आपकी सुरक्षा परन्तु आगे वह कहता है, कुलुस्सियों 3:3, "क्योंकि तुम तो मर गए और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है।"

आप मर चुके हैं और मसीह में आपका जीवन परमेश्वर में अवस्थित है। अतः मसीह परमेश्वर में है, मसीह आपमें है, आप मसीह में हैं।

अब यदि बैरी आपके पास आना चाहेगा तो उसे पहले परमेश्वर का सामना करना पड़ेगा और परमेश्वर तो उसे पहले ही क्रूस पर हरा चुका है। अब यदि किसी प्रकार वह आगे बढ़ भी जाए तो पवित्र आत्मा वहां है। अतः आपको डरने की आवश्यकता ही नहीं है चाहे संसार हो, चाहे आत्मिक युद्ध हो। आप पूर्णतः सुरक्षित हैं। महिमा की आशा मसीह आपमें वास करता है।

अन्त में परिपूर्ण जीवन, महिमा की आशा– कुलुस्सियों 3:4, "जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाओगे।"

मसीह आपमें अर्थात सदाकालीन अन्तर्वास। सी.एस. लूईस कहते हैं, "परमेश्वर आपको जहां ले जाना चाहता है, वह पूर्ण सिद्धता है और वहां पहुंचने से आपको कोई शक्ति नहीं रोक सकती। हां, आप अपने आपको रोक सकते हैं। यह स्थानीय धार्मिकता है। यह है आपका मसीह में अवस्थित होना।"

अब आती है, व्यावहारिक धार्मिकता– आपका धार्मिक जीवन, दैनिक अनुभव। इफिसियों 4:22–24, "कि तुम पिछले चालचलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमानेवाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ, और नये मनुष्यत्व को पहिन लो जो परमेश्वर के अनुरूप सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है।"

कुलुस्सियों 3:1–4, "अतः जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह विद्यमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ, क्योंकि तुम तो मर गए और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाओगे।"

आपका पुराना मनुष्यत्व मर चुका है। यीशु आपके लिए मरा कि आपमें जीवित रहे। सच्चा आत्मिक परिवर्तन भीतर से बाहर का है। यीशु आपको सुधारना नहीं बदलना चाहता है। मसीही जीवन प्रभु यीशु का दैनिक जीवन है। यह आत्मिक युद्ध है। मसीह आपमें है। गलातियों 4:19, "हे मेरे बालको, जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए, तब तक मैं तुम्हारे लिये फिर जच्चा की सी पीड़ाएं सहता हूं।"

सुसमाचार की शान्ति के जूते

धार्मिकता का झिलम पहनकर सुसमाचार की शान्ति के जूते धारण करो। उस आत्मिक युद्ध में हमारा मेल परमेश्वर के साथ है। हमें दृढ़ सुरक्षा की तत्कालिक आवश्यकता पड़ती है। 1 पतरस 3:15, "पर मसीह को प्रभु जानकर अपने अपने मन में पवित्र समझो। जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, तो उसे उत्तर देने के लिये सर्वदा तैयार रहो, पर नम्रता और भय के साथ।"

अतः हम शान्ति के सन्देश के साथ आगे बढ़ते हैं। हर एक मोड़ पर हमें प्राप्त आशा की घोषणा करना है।

सुसमाचार प्रचार सुसमाचार के सामर्थ्य को जानने का सर्वोत्तम तरीका है। फिलिप्पियों 1:6, "मुझे इस बात का भरोसा है कि जिसने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा।"

सुसमाचार का सामर्थ्य देखने के लिए आपको सुसमाचार प्रचार करना आवश्यक है। विश्वास को बांटने से हमें मसीह में हर एक अच्छी वस्तु की पूर्ण समझ प्राप्त होती है।

आत्मिक युद्ध में सुसमाचार का प्रचार करना आवश्यक है। रोमियों की पत्री में पौलुस कहता है कि हमें स्मरण रखना है कि हम किसके हैं।

रोमियों 1:1–5, "पौलुस की ओर से जो यीशु मसीह का दास है, और प्रेरित होने के लिये बुलाया गया, और परमेश्वर के उस सुसमाचार के लिये अलग किया गया है जिसकी उसने पहले ही से अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा पवित्रशास्त्र में, अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय में प्रतिज्ञा की थी; वह शरीर के भाव से तो दाऊद के वंश से उत्पन्न हुआ और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण

सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है। उसके द्वारा हमें अनुग्रह और प्रेरिताई मिली कि उसके नाम के कारण सब जातियों के लोग विश्वास करके उसकी मानें।"

हम सुसमाचार के सेवक हैं, "मैं मसीह यीशु का दास..." हमें सुसमाचार के साथ भेजा गया है। हम सुसमाचार के लिए अलग किए गए हैं। 1 कुरिन्थियों 15:3–5, "इसी कारण मैं ने सब से पहले तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी कि पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, और गाड़ा गया, और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा, और कैफा को तब बारहों को दिखाई दिया।"

एक प्रश्न, "क्या आप सुसमाचार का संक्षिप्त एवं पूर्ण विवरण सुना सकते हैं?" सुसमाचार के ज्ञान में कमी के कारण हम जयवन्त नहीं हो पाएंगे।

मेरे विचार में सुसमाचार और नये नियम की पांच मुख्य बाते हैंः परमेश्वर का चरित्र, मनुष्य की पापी दशा, मसीह की पर्याप्तता, विश्वास की आवश्यकता, अनन्त जीवन की तत्काल आवश्यकता। सुसमाचार क्या है? जगत के धर्मी एवं अनुग्रहकारी परमेश्वर ने आशा से रहित पापी एवं पूर्णरूपेण विद्रोही मनुष्य को देखा और अपने पुत्र को मानवीय देह में भेजा जो स्वयं परमेश्वर है कि उसके क्रोध को क्रूस पर उठाकर पुनरुत्थान द्वारा पाप पर अपना सामर्थ्य प्रकट करे कि उसमें विश्वास करनेवाला हर एक मनुष्य परमेश्वर के साथ सदा का मेल कर पाए।" यह सुसमाचार है।

हमें समझना है कि हमारा विश्वास क्या है। हम यहां क्या हैं। रोमियों 1:14–15, "मैं यूनानियों और अन्यभाषियों का, और बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का कर्जदार हूं। अतः मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूं।"

हम उसके नाम के महिमान्वन हेतु यहां हैं। हम सब जातियों में सुसमाचार सुनाने के लिए यहां हैं। प्रार्थना करना हमारा उत्तरदायित्व है और हमें ऋण चुकाना है। प्रत्येक उद्धार प्राप्त मनुष्य नरक के इस पार प्रत्येक मनुष्य को सुसमाचार सुनाने का ऋणी है।

हमें अपना जीवन जीने का निर्णय लेना है। रोमियों 1:16–17, "क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिये, पहले तो यहूदी फिर यूनानी के लिये, उद्धार के

निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है। क्योंकि उसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से और विश्वास के लिये प्रगट होती है; जैसा लिखा है, "विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा।"

हमारा जीवन ऐसा हो कि हमें कभी लज्जा न उठानी पड़े। यह आत्मिक युद्ध है। आप जय पाना चाहते हैं? लज्जारहित जीवन जीएं। निर्बाध्य जीवन जीएं। शान्ति के सुसमाचार प्रचार के लिए तैयार रहें। रोमियों 10:12–15, "यहूदियों और यूनानियों में कुछ भेद नहीं, इसलिये कि वह सब का प्रभु है और अपने सब नाम लेनेवालों के लिये उद्धार है। क्योंकि, "जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।" फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम कैसे लें? और जिसके विषय सुना नहीं उस पर कैसे विश्वास करें? और प्रचारक बिना कैसे सुनें? और यदि भेजे न जाएं, तो कैसे प्रचार करें? जैसा लिखा है, "उनके पांव क्या ही सुहावने हैं, जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते हैं!"

विश्वास की ढाल

बैरी अग्निबाण चला रहा है। आप क्या करेंगे? परमेश्वर के गुणों में विश्वास रखें। शैतान आपके मन में परमेश्वर की भलाई और महानता के प्रति सन्देह उत्पन्न करेगा। आप इसका सामना कैसे करेंगे? क्या आप कहेंगे, "सन्देह की दुष्टात्मा दूर हो?" नहीं। भजन 84:11, "क्योंकि यहोवा परमेश्वर सूर्य और ढाल है; यहोवा अनुग्रह करेगा, और महिमा देगा; और जो लोग खरी चाल चलते हैं, उनसे वह कोई अच्छी वस्तु रख न छोड़ेगा।"

आप कहेंगे मेरा परमेश्वर मेरा सूर्य और ढाल है। आप कहेंगे जिसमें मेरे लिए सब कुछ त्याग दिया वह मुझे हर आवश्यक वस्तु देगा। रोमियों 8:32, "जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दिया, वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्यों न देगा?"

परमेश्वर हमारे साथ है तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?

आपको परमेश्वर की प्रतिज्ञा में विश्वास रखना है। शैतान कहेगा, "तू दोषी है।" आप कहेंगे, "जो मसीह में हैं उन पर कोई दोष नहीं क्योंकि जीवन के आत्मा ने मुझे मुक्त कर दिया है–पाप और मृत्यु की व्यवस्था से।" शैतान कहेगा, "तू तो अकेला है।" आप कहेंगे, "मैं हताश न होऊंगा क्योंकि मैं जहां जाऊंगा मेरा परमेश्वर मेरे साथ है। मुझे भय न होगा। परमेश्वर कहता है, 'भयभीत न हो। मैं ने तुझे नाम लेकर बुलाया

है तू मेरा है।" गहरे जल में भी परमेश्वर आपके साथ है और यदि आप नदियों से होकर चलें तो वह आपको डुबो न पाएगी।

परमेश्वर अपनों की सुधि लेता है। वचन से प्रेम करें तो शैतान भागेगा और उसके अग्निबाण आपके विश्वास ढाल से रुक जाएंगे। गिनती 23:19, "ईश्वर मनुष्य नहीं कि झूठ बोले, और न वह आदमी है कि अपनी इच्छा बदले। क्या जो कुछ उसने कहा उसे न करे? क्या वह वचन देकर उसे पूरा न करे?"

विश्वास की ढाल का अर्थ है, परमेश्वर के सामर्थ्य में विश्वास। 1 पतरस 1:1–5, "पतरस की ओर से जो यीशु मसीह का प्रेरित है, उन परदेशियों के नाम जो पुन्तुस, गलातिया, कप्पदुकिया, आसिया, और बिथुनिया में तितर–बितर होकर रहते हैं, और परमेश्वर पिता के भविष्य ज्ञान के अनुसार, आत्मा के पवित्र करने के द्वारा आज्ञा मानने और यीशु मसीह के लहू के छिड़के जाने के लिये चुने गए हैं। तुम्हें अनुग्रह और शान्ति बहुतायत से मिलती रहे। हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिसने यीशु मसीह को मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिये नया जन्म दिया, अर्थात् एक अविनाशी, और निर्मल, और अजर मीरास के लिये जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रखी है; जिनकी रक्षा परमेश्वर की सामर्थ्य से विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिये, जो आनेवाले समय में प्रगट होनेवाली है, की जाती है।"

1 पतरस 5:5–11, "इसी प्रकार हे नवयुवको, तुम भी प्राचीनों के अधीन रहो, वरन् तुम सब के सब एक दूसरे की सेवा के लिये दीनता से कमर बांधे रहो, क्योंकि "परमेश्वर अभिमानियों का सामना करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है।" इसलिये परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए। अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है। सचेत हो, और जागते रहो; क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए। विश्वास में दृढ़ होकर, और यह जानकर उसका सामना करो कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं ऐसे ही दुःख सह रहे हैं। अब परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है, जिसने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिये बुलाया, तुम्हारे थोड़ी देर तक दुःख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और स्थिर और बलवन्त करेगा। उसी का साम्राज्य युगानुयुग रहे। आमीन।"

शैतान के अग्निबाण हैं; परीक्षा, झूठ, छल, उसकी युक्तियां। आप पवित्रता का अनुभव करके उन्नति और पवित्रता में आगे बढ़ते हैं तो आप शैतान के अग्निबाणों का सामना करते हैं। आप जितना अधिक उस महान

आदेश को पूरा करेंगे, शैतान उतने अधिक वार आप पर करेगा। आप चुप बैठे रहेंगे तो शैतान को चिन्ता न होगी। सुसमाचार प्रचार उसकी सबसे बड़ी चिन्ता का कारण है। परमेश्वर का कार्य करनेवालों की पीठ पर शैतान का लक्ष्य सधा होता है।

1 राजा 18 में एलिय्याह यही करता है। वह स्वर्ग से आग बुलाता है। उसे राजा अहाब ने इस्राएल का कष्ट देनेवाला कहा था। मुझे यह अच्छा लगता है। वह अन्धकार के राज्य का कष्टकारक था।

उद्धार का टोप

इसका अर्थ है, आत्मिक युद्ध मे विजय उद्धार के व्यापक अर्थ को अन्तर्ग्रहण करने पर आधारित होती है। पाप से उद्धार का अर्थ क्या है। हमें स्मरण रखना है कि हमारा उद्धार हो चुका है। धर्मशास्त्र कहता है कि हमारा उद्धार हो चुका है। हम परमेश्वर के समक्ष धर्मी ठहराए जा चुके हैं। गलातियों 2:15–20, "हम तो जन्म से यहूदी हैं, और पापी अन्यजातियों में से नहीं। तौभी यह जानकर कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, पर केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है, हम ने आप भी मसीह यीशु पर विश्वास किया कि हम व्यवस्था के कामों से नहीं, पर मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरें; इसलिये कि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी न ठहरेगा। हम जो मसीह में धर्मी ठहरना चाहते हैं, यदि आप ही पापी निकलें तो क्या मसीह पाप का सेवक है? कदापि नहीं। क्योंकि जो कुछ मैं ने गिरा दिया यदि उसी को फिर बनाता हूं, तो अपने आप को अपराधी ठहराता हूं। मैं तो व्यवस्था के द्वारा व्यवस्था के लिये मर गया कि परमेश्वर के लिये जीऊं। मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है; और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिये अपने आप को दे दिया।"

आप परमेश्वर के समक्ष धर्मी कैसे हुए? केवल मसीह में सच्चा विश्वास रखकर। मेरा विवेक मुझे दोष देता है कि मैं ने आज्ञाएं तोड़कर पाप किया है और मैं सब बुराईयों को करने के लिए प्रवण हूं तथापि मेरी किसी योग्यता से निरपेक्ष परमेश्वर अपने अनुग्रह द्वारा मुझे मसीह के सिद्ध बलिदान का लाभ प्रदान करता है और मुझ में उसकी धार्मिकता एवं पवित्रता रोपित करता है जैसे कि मैं ने कभी कोई पाप न किया हो और मसीह की पूर्ण आज्ञाकारिता मेरी ही हो परन्तु यदि मैं विश्वास के साथ इस अनुग्रह को स्वीकार करूं।

यह धार्मिकता है– पाप के दण्ड से मुक्ति। यह आत्मिक युद्ध में अत्यधिक महत्वपूर्ण है परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि आप जैसा जीवन चाहें वैसा जीएं। यह तो हमारी हार है। यह उद्धार की झूठी धारणा है। यह अन्त नहीं आरंभ है।

हमारा उद्धार हो चुका है। हमारा उद्धार हो रहा है। फिलिप्पियों 2:12–13, "इसलिये हे मेरे प्रियो, जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो, वैसे ही अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुए पर विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर भी डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ; क्योंकि परमेश्वर ही है जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है।"

पवित्रता– पाप के सामर्थ्य से मुक्ति। आप पाप से अब भी संघर्ष करते हैं परन्तु आपको पाप पर सामर्थ प्राप्त है। यह एक नया जीवन है दैनिक आचरण है।

रोमियों 8:28–30, "हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं। क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों, ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे। फिर जिन्हें उसने पहिले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी; और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया है; और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है।"

हमारा भावी उद्धारः जब हम पाप की उपस्थिति ही से मुक्ति पाकर महिमा में होंगे। हमारे मसीही जीवन की उलझन का कारण है धार्मिकता, पवित्रता और महिमा को सही न समझ पाना। शैतान हमारे मन में डालता है कि हम स्वयं धार्मिकता प्राप्त कर सकते हैं और पवित्रता हमारी इच्छा पर निर्भर है। हम सोचते हैं, "हम तो स्वर्ग जाएंगे। अतः पाप से अन्तर नहीं पड़ता।" या फिर हम सोचते हैं, "हम कभी स्वर्ग नहीं जा सकते।" और हम निराश हो जाते हैं। हम भूल जाते हैं कि एक दिन पाप पूर्ण रूप से समाप्त हो जाएगा। हमें उस दिन का यत्न करना है। आत्मिक युद्ध में इन तीनों बातों की समझ होना आवश्यक है।

आत्मा की तलवार

यह परमेश्वर का वचन है– रक्षात्मक एवं आक्रामक हथियार। इब्रानियों 4:12, "क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है; और प्राण और आत्मा को, और गांठ–गांठ और गूदे गूदे को अलग करके आर–पार छेदता है और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है।"

इसमें दो राय नहीं। यीशु ने तीनों परीक्षाओं के वार को धर्मशास्त्र की ढाल से नष्ट किया था। मत्ती 4:1–11, "तब आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि इब्लीस से उस की परीक्षा हो। वह चालीस दिन, और चालीस रात, निराहार रहा, तब उसे भूख लगी। तब परखनेवाले ने पास आकर उस से कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे, कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं।" यीशु ने उत्तर दियाः "लिखा है, 'मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।'" तब इब्लीस उसे पवित्र नगर में ले गया और मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा किया, और उससे कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को नीचे गिरा दे; क्योंकि लिखा हैः 'वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा, और वे तुझे हाथों–हाथ उठा लेंगे; कहीं ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे।'" यीशु ने उससे कहा, "यह भी लिखा हैः 'तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।'" फिर इब्लीस उसे एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उसका वैभव दिखाकर उससे कहा, "यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा।" तब यीशु ने उससे कहा, "हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा हैः 'तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर।'" तब शैतान उसके पास से चला गया, और देखो, स्वर्गदूत आकर उसकी सेवा करने लगे।"

इसका अर्थ क्या यह है कि प्रभु यीशु को भी परीक्षा से बचने के लिए धर्मशास्त्र की आड़ लेनी पड़ी थी? कदापि नहीं। यीशु के मुख से जो भी निकलता वह पवित्र वचन ही था। उसने तो धर्मशास्त्र का संदर्भ इसलिए दिया था कि हम पर प्रकट हो कि परमेश्वर के वचन में परीक्षा पर जय पाने का सामर्थ्य है। यह एक अति महान सत्य है। क्या आप आत्मिक युद्ध में जय पाना चाहते हैं? वचन को पढ़ें, उसका अध्ययन करें और कंठस्थ करें। उसे अपने मन में बसा लें। वचन पर मनन करें और उस पर आचरण करें।

आचरण करें:

अन्त में आता है, वचन को अपने जीवन में अपनाएं। मेरे विचार में, हमने आत्मिक युद्ध पर आज की शिक्षाओं और साहित्य में हम इस एक बात से चूक गए हैं। आत्मिक युद्ध के अधिकांश शिक्षक प्रभु यीशु से

सर्वथा भिन्न नीति पर आत्मिक युद्ध करते हैं। यीशु पर परीक्षा के तीन अग्निबाण छोड़े गए और यीशु ने शैतान के साथ वाद–विवाद करने का चुनाव नहीं किया और न ही उसने उसे दोष देने या बांधने का प्रयास किया। उसने वचन की तलवार उठाई और शैतान भागा। अतः आत्मिक युद्ध में व्यस्त मनुष्यों को वाद–विवाद की अपेक्षा परमेश्वर के वचन की आवश्यकता है क्योंकि वही परमेश्वर का सामर्थ्य है। अतः आत्मा की तलवार उठा लें और उसमें विश्वास करें। यही परमेश्वर का वचन है।

प्रार्थना

यह परमेश्वर का अन्तिम हथियार है। मार्टिन लूथर ने कहा था कि सृजित प्राणियों द्वारा चलाया जानेवाला सबसे शक्तिशाली हथियार प्रार्थना है। प्रार्थना आत्मिक युद्ध का केन्द्र है।

इफिसियों 6:18–20, "हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और विनती करते रहो, और इसी लिये जागते रहो कि सब पवित्र लोगों के लिये लगातार विनती किया करो, और मेरे लिये भी कि मुझे बोलने के समय ऐसा प्रबल वचन दिया जाए कि मैं साहस से सुसमाचार का भेद बता सकूं, जिसके लिये मैं जंजीर से जकड़ा हुआ राजदूत हूं; और यह भी कि मैं उसके विषय में जैसा मुझे चाहिए साहस से बोलूं।"

हर एक प्रार्थना आत्मिक युद्ध से संबन्धित है क्योंकि प्रार्थना हमारा परमेश्वर के साथ संपर्क है। हमें यत्नपूर्वक प्रार्थना करना है। हमें बलपूर्वक प्रार्थना करना है। हमें विषय विशेष के लिए युक्तियुक्त प्रार्थना करना है।

प्रेरितों के काम 2:42, "और वे प्ररितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।"

यह आरंभिक कलीसिया है जो आत्मिक युद्ध में थी। वे संपूर्ण संसार और उसकी वस्तुओं पर परमप्रधान परमेश्वर से प्रार्थना कर रहे थे। वे सर्वशक्तिमान परमेश्वर को जानते थे जो हमारी हर एक आवश्यकता को पूरी करता है।

मेरा एक प्रिय पद है, प्रेरितों के काम 17:25, "न किसी वस्तु की आवश्यकता के कारण मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह स्वयं ही सब को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है।"

आरंभिक कलीसिया जानती थी कि सामर्थ्य परमेश्वर की सेवा में नहीं है। परमेश्वर से सेवा प्राप्त करना वास्तव में सामर्थ्य है। आक्रामकता यह नहीं कि हम कहें, "परमेश्वर मैं तेरे लिए यह काम करना चाहता हूं।" परन्तु मुंह के बल गिरकर परमेश्वर को पुकारना कि वह हम में या हमारे द्वारा कार्य करे।

नये नियम की कलीसिया प्रार्थना करती थी क्योंकि वे परमेश्वर के सामर्थ्य पर पूरी तरह निर्भर थे। प्रेरितों के काम 4:31, "जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह स्थान जहां वे इकट्ठे थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे।"

वे जानते थे कि वे परमेश्वर के बिना कुछ नहीं कर सकते और वे परमेश्वर के अनुग्रह के लिए प्राणपण से प्रयासरत थे। प्रेरितों के काम 4:33, "प्रेरित बड़ी सामर्थ्य से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था।"

वे परमेश्वर के अनुग्रह पर पूर्णरूपेण निर्भर थे और उसके सेवाकार्य के प्रति समर्पित थे। प्रेरितों के काम 4:29, "अब हे प्रभु, उनकी धमकियों को देख; और अपने दासों को यह वरदान दे, कि तेरा वचन बड़े हियाव से सुनाएं।"

इस कारण वे प्रार्थना करते थे। भाइयों और बहनों परमेश्वर ने हमें प्रार्थना का हथियार दिया है क्योंकि प्रभु यीशु ने हमें दूतकार्य सौंपा है।

हमें प्रार्थना क्यों करना है? यदि हम दूतकार्य नहीं कर रहे हैं तो प्रार्थना करने के लिए ऐसा क्या गंभीर विषय है। आप मसीह की महिमा के लिए जोखिम उठा ही नहीं रहे हैं। आप युद्ध की उग्ररेखा पर सुसमाचार प्रचार कर रहे हैं और शुद्धता और पवित्रता का यत्न करते हैं और पृथ्वी की छोर तक परमेश्वर की पवित्रता का प्रचार कर रहे हैं तो आपको पिता परमेश्वर से अविराम संपर्क बनाए रखना है और यही प्रार्थना है।

नये नियम की कलीसिया जब जब एकत्र होती थी तब तब प्रार्थना करती थी। प्रेरितों के काम 1:14, "ये सब कई स्त्रियों और यीशु की माता मरियम और उसके भाइयों के साथ एक चित्त होकर प्रार्थना में लगे रहे।"

प्रेरितों के काम 13:1–14, "अन्ताकिया की कलीसिया में कई भविष्यद्वक्ता और उपदेशक थे; जैसेः बरनबास और शमौन जो नीगर कहलाता है; और लूकियुस कुरेनी, और चौथाई देश के राजा हेरोदेस का दूधभाई मनाहेम, और शाऊल। जब वे उपवास सहित प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा, "मेरे लिये बरनबास और शाऊल को उस काम के लिये अलग करो जिसके लिये मैं ने उन्हें बुलाया है।" तब उन्होंने उपवास और प्रार्थना करके और उन पर हाथ रखकर उन्हें विदा किया। अतः वे पवित्र आत्मा के भेजे हुए सिलूकिया को गए; और वहां से जहाज पर चढ़कर साइप्रस को चले; और सलमीस में पहुंचकर, परमेश्वर का वचन यहूदियों के आराधनालयों में सुनाया। यूहन्ना उनका सेवक था। वे उस सारे टापू में होते हुए पाफुस तक पहुंचे। वहां उन्हें बार–यीशु नामक एक यहूदी टोन्हा और झूठा भविष्यद्वक्ता मिला। वह हाकिम सिरगियुस पौलुस के साथ था, जो बुद्धिमान पुरुष था। उसने बरनबास और शाऊल को अपने पास बुलाकर परमेश्वर का वचन सुनना चाहा। परन्तु इलीमास टोन्हे ने, क्योंकि यही उसके नाम का अर्थ है उनका विरोध करके हाकिम को विश्वास करने से रोकना चाहा। तब शाऊल ने जिसका नाम पौलुस भी है, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो उसकी ओर टकटकी लगाकर कहा, "हे सारे कपट और सब चतुराई से भरे हुए शैतान की सन्तान, सकल धर्म के बैरी, क्या तू प्रभु के सीधे मार्गों को टेढ़ा करना न छोड़ेगा? अब देख, प्रभु का हाथ तुझ पर लगा है; और तू कुछ समय तक अंधा रहेगा और सूर्य को न देखेगा।" तब तुरन्त धुंधलापन और अन्धेरा उस पर छा गया, और वह इधर उधर टटोलने लगा ताकि कोई उसका हाथ पकड़के ले चले। तब हाकिम ने जो कुछ हुआ था उसे देखकर और प्रभु के उपदेश से चकित होकर विश्वास किया। पौलुस और उसके साथी पाफुस से जहाज खोलकर पंफूलिया के पिरगा में आए; और यूहन्ना उन्हें छोड़कर यरूशलेम को लौट गया। पिरगा से आगे बढ़कर वे पिसिदिया के अन्ताकिया में पहुंचे; और सब्त के दिन आराधनालय में जाकर बैठ गए।"

अलग रहते समय भी वे प्रार्थना करते थे।

प्रेरितों के काम 16:6–8, "वे फ्रूगिया और गलातिया प्रदेशों में से होकर गए, क्योंकि पवित्र आत्मा ने उन्हें एशिया में वचन सुनाने से मना किया। उन्होंने मूसिया के निकट पहुंचकर, बितूनिया में जाना चाहा; परन्तु यीशु के आत्मा ने उन्हें जाने न दिया। अतः वे मूसिया से होकर वे त्रोआस में आए।"

परमेश्वर के वचन की सफलता के लिए वे प्रार्थना करते थे।

यूहन्ना 14:13, "जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो।"

प्रेरितों के काम 4:29, "अब हे प्रभु, उनकी धमकियों को देख; और अपने दासों को यह वरदान दे, कि तेरा वचन बड़े हियाव से सुनाएं।"

वे परमेश्वर की उपासना के विस्तार के लिए भी प्रार्थना करते थे। यह प्रभु की प्रार्थना का मुख्य भाग है– मत्ती 6:9–10, "अतः तुम इस रीति से प्रार्थना किया करोः 'हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए। 'तेरा राज्य आए। तेरी इच्छी जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।"

"तेरा नाम पवित्र माना जाए" यह घोषणा नहीं याचना है। इसका अर्थ है कि परमेश्वर अपने नाम की पवित्रता प्रकट करे। हम पृथ्वी की छोर तक के लिए यह प्रार्थना करते हैं। यह सब परमेश्वर के हथियारों में है। यह आत्मिक युद्ध है।

कुरिन्थ की कलीसिया का आत्मिक युद्ध...

कुरिन्थ की कलीसिया में प्रचार करते समय परमेश्वर के हथियारों का उपयोग प्रकट है। हम संसार, देह और शैतान के घेरे में हैं। हमें दृढ़ खड़े रहकर और सत्य, धर्म, शान्ति के सुसमाचार, विश्वास, हमारे उद्धार के ज्ञान, उद्धार की समझ, परमेश्वर के वचन के साथ आगे बढ़ना है और अविराम प्रार्थना करना है।

मैं चाहता हूं कि हमने जो अध्ययन किया है उस पर विचार करें और उसी पर ध्यान लगाएं। कहा जाता है कि आत्मिक युद्ध के लिए विशेषज्ञों की आवश्यकता पड़ती है परन्तु मैं पुकार कर कहता हूं कि आत्मिक युद्ध में विशेषज्ञों की नहीं मसीह में अवस्थित स्त्री–पुरुष की आवश्यकता होती है जो मसीह को जानते हैं। आप मसीह में हैं, मसीह परमेश्वर में है, मसीह आप में है तो आपको किसी विशेषज्ञ रणनीति की आवश्यकता नहीं है। आप उन सब बातों के आधार पर विजयी हैं जिनका हमने अध्ययन किया है।

विवादस्पद प्रश्न

दुष्टात्मा निकालने की सेवा के विषय आप क्या कहेंगे?

मैं सच कहता हूं, कि मैं यह सेवा नहीं करता हूं। परन्तु मैं संसार में अनेक स्थानों पर रहा हूं जहां यह किया जाता है। हाल ही में मैं ने भारत में यह देखा है। मैं परमेश्वर के वचन से इसके उदाहरण देखना चाहता हूं। निःसन्देह यीशु, और मत्ती, मरकुस, लूका और प्रेरितों के काम में प्रेरितों ने दुष्टात्माएं निकाली हैं।

मरकुस 1:23–28, "उसी समय, उनके आराधनालय में एक मनुष्य था, जिसमें एक अशुद्ध आत्मा थी। उसने चिल्लाकर कहा, "हे यीशु नासरी, हमें तुझ से क्या काम? क्या तू हमें नष्ट करने आया है? मैं तुझे जानता हूं, तू कौन है? परमेश्वर का पवित्र जन!" यीशु ने उसे डांट कर कहा, "चुप रह; और उसमें से निकल जा।" तब अशुद्ध आत्मा उसको मरोड़कर, और बड़े शब्द से चिल्लाकर उसमें से निकल गई। इस पर सब लोग आश्चर्य करते हुए आपस में वाद–विवाद करने लगे, "यह क्या बात है? यह तो कोई नया उपदेश है! वह अधिकार के साथ अशुद्ध आत्माओं को भी आज्ञा देता है, और वे उसकी आज्ञा मानती हैं।" और उसका नाम तुरन्त गलील के आसपास के सारे प्रदेश में फैल गया।"

लूका 10:17–20, "वे सत्तर आनन्द करते हुए लौटे और कहने लगे, "हे प्रभु, तेरे नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में है।" उसने उनसे कहा, "मैं शैतान को बिजली के समान स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था। देखो, मैं ने तुम्हे सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ्य पर अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी। तौभी इससे आनन्दित मत हो कि आत्मा तुम्हारे वश में हैं, परन्तु इस से आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं।"

प्रेरितों के काम 8:4–8, "जो तितर–बितर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे; और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा। जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और जो चिन्ह वह दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया। क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएं बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गईं, और बहुत से लकवे के रोगी और लंगड़े भी अच्छे किए गए; और उस नगर में बड़ा आनन्द छा गया।"

प्रेरितों के काम 13:8–11, "परन्तु इलीमास टोन्हे ने, क्योंकि यही उसके नाम का अर्थ है उनका विरोध करके हाकिम को विश्वास करने से रोकना चाहा। तब शाऊल ने जिसका नाम पौलुस भी है, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो उसकी ओर टकटकी लगाकर कहा, "हे सारे कपट और सब चतुराई से भरे हुए शैतान की सन्तान, सकल धर्म के बैरी, क्या तू प्रभु के सीधे मार्गों को टेढ़ा करना न छोड़ेगा? अब देख, प्रभु का हाथ

तुझ पर लगा है; और तू कुछ समय तक अंधा रहेगा और सूर्य को न देखेगा।" तब तुरन्त धुंधलापन और अन्धेरा उस पर छा गया, और वह इधर उधर टटोलने लगा ताकि कोई उसका हाथ पकड़के ले चले।"

प्रेरितों के काम 16:16–18, "जब हम प्रार्थना करने की जगह जा रहे थे, तो हमें एक दासी मिली जिसमें भावी कहनेवाली आत्मा थी; और भावी कहने से अपने स्वामियों के लिये बहुत कुछ कमा लाती थी। वह पौलुस के और हमारे पीछे आकर चिल्लाने लगी, "ये मनुष्य परमप्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो हमें उद्धार के मार्ग की कथा सुनाते हैं।" वह बहुत दिन तक ऐसा ही करती रही; परन्तु पौलुस दुःखी हुआ, और मुड़कर उस आत्मा से कहा, "मैं तुझे यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देता हूं कि उसमें से निकल जा।" और वह उसी घड़ी निकल गई।"

इन सब संदर्भों को देखते हुए हम दुष्टात्माओं को निकालने के विषय क्या कहें?

पहले तो मेरे विचार में दुष्टात्माओं के कार्यों के प्रकाश में कुछ सकारात्मक बातें सामने आती हैं। प्रेतमुक्ति की सेवाएं स्पष्ट करती हैं कि हमारे चारों ओर एक आत्मिक संसार है और व्यक्तिगत समस्याएं केवल मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, शरीर विज्ञान और वातावरण संबन्धित कारकों तक ही सीमित नहीं हैं। वहां कुछ और भी है– हमारी आत्मा के लिए एक युद्ध चल रहा है और इसी कारण प्रेतमुक्ति सेवाएं प्रार्थना और बाइबल आधारित आत्मिक युद्ध पर बल देती हैं।

ये सब अच्छा है परन्तु मेरे विचार में इसमें गंभीर समस्याएं भी हैं। एक समस्या है, अतिवादिता जिसकी सी.एस. लूईस ने चेतावनी दी है। अन्धविश्वास और भ्रान्ति। सुसमाचार जैसे मुख्य विषय की अपेक्षा मनुष्य अप्रधान बातों को महत्व देता है। सत्य द्वारा अनुभव की व्याख्या की अपेक्षा अनुभव द्वारा सत्य का निर्धारण तदोपरान्त दोष मढ़ना जैसे शैतान ने मुझ से यह काम करवाया।

प्रेतमुक्ति सेवा के दो मुख्य आधार हैं: 1) प्रभु यीशु और शिष्यों ने दुष्टात्माएं निकाली थीं। 2) बाइबल में मना नहीं है। क्या आप प्रभु यीशु के तुल्य होना चाहते हैं? यदि हम अलौकिक के प्रति पक्षपात न करें तो हमें यह काम करना चाहिए क्योंकि बाइबल नहीं कहती कि ऐसा मत कर।

बाइबल और प्रेतमुक्ति सेवा के वर्णन को देख कर मुझे इसमें दो त्रुटियां दिखाई देती हैं। 1) वे नैतिक बुराई और प्राकृतिक बुराई में अन्तर नहीं देख पाते। नैतिक बुराई के परिप्रेक्ष्य में दुष्टात्मा निकालने का

उदाहरण बाइबल में कहीं नहीं है। इस क्षेत्र में अनेक दुष्टात्माएं हैंः क्रोध, लालसा, घमण्ड, भय, अविश्वास, आदि। प्रभु यीशु ने इनका निवारण नहीं किया था। न ही पुराने नियम में, न ही सुसमाचारों में, नये नियम की पत्रियों में हमें यह देखने को मिलता है। वहां इनका निकालना नहीं है वरन् मन फिराने की पुकार है। प्रेरितों के काम 8 में शमौन जादूगर के साथ ऐसा ही था। यह अन्यजातियों द्वारा मसीह को ग्रहण करने का वृत्तान्त है।

प्रेरितों के काम 8:18–23, "जब शमौन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता है, तो उनके पास रुपये लाकर कहा, "यह अधिकार मुझे भी दो, कि जिस किसी पर हाथ रखूं वह पवित्र आत्मा पाए। पतरस ने उससे कहा, "तेरे रुपये तेरे साथ नष्ट हों, क्योंकि तू ने परमेश्वर का दान रुपयों से मोल लेने का विचार किया। इस बात में न तेरा हिस्सा है, न भाग; क्योंकि तेरा मन परमेश्वर के आगे सीधा नहीं। इसलिये अपनी इस बुराई से मन फिराकर प्रभु से प्रार्थना कर, सम्भव है तेरे मन का विचार क्षमा किया जाए। क्योंकि मैं देखता हूं कि तू पित्त की सी कड़वाहट और अधर्म के बन्धन में पड़ा है।"

प्रेरितों के काम 26:15–18, "मैं ने कहा, 'हे प्रभु तू कौन है?' प्रभु ने कहा, 'मैं यीशु हूं, जिसे तू सताता है। परन्तु तू उठ, अपने पांवों पर खड़ा हो; क्योंकि मैं ने तुझे इसलिये दर्शन दिया है कि तुझे उन बातों का भी सेवक और गवाह ठहराऊं, जो तू ने देखी हैं, और उनका भी जिनके लिये मैं तुझे दर्शन दूंगा। और मैं तुझे तेरे लोगों से और अन्यजातियों से बचाता रहूंगा, जिनके पास मैं अब तुझे इसलिये भेजता हूं कि तू उनकी आंखे खोले कि वे अंधकार से ज्योति की ओर, और शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर फिरें; कि पापों की क्षमा और उन लोगों के साथ जो मुझ पर विश्वास करने से पवित्र किए गए हैं, मीरास पाएं।'"

प्रेरितों के काम 13:4–22, "अतः वे पवित्र आत्मा के भेजे हुए सिलूकिया को गए; और वहां से जहाज पर चढ़कर साइप्रस को चले; और सलमीस में पहुंचकर, परमेश्वर का वचन यहूदियों के आराधनालयों में सुनाया। यूहन्ना उनका सेवक था। वे उस सारे टापू में होते हुए पाफुस तक पहुंचे। वहां उन्हें बार–यीशु नामक एक यहूदी टोन्हा और झूठा भविष्यद्वक्ता मिला। वह हाकिम सिरगियुस पौलुस के साथ था, जो बुद्धिमान पुरुष था। उसने बरनबास और शाऊल को अपने पास बुलाकर परमेश्वर का वचन सुनना चाहा। परन्तु इलीमास टोन्हे ने, क्योंकि यही उसके नाम का अर्थ है उनका विरोध करके हाकिम को विश्वास करने से रोकना चाहा। तब शाऊल ने जिसका नाम पौलुस भी है, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो उसकी ओर टकटकी लगाकर कहा, "हे सारे कपट और सब चतुराई से भरे हुए शैतान की सन्तान, सकल धर्म के बैरी, क्या तू प्रभु के सीधे मार्गों को टेढ़ा करना न छोड़ेगा? अब देख, प्रभु का हाथ तुझ पर लगा है; और तू कुछ

समय तक अंधा रहेगा और सूर्य को न देखेगा।" तब तुरन्त धुंधलापन और अन्धेरा उस पर छा गया, और वह इधर उधर टटोलने लगा ताकि कोई उसका हाथ पकड़के ले चले। तब हाकिम ने जो कुछ हुआ था उसे देखकर और प्रभु के उपदेश से चकित होकर विश्वास किया। पौलुस और उसके साथी पाफुस से जहाज खोलकर पंफूलिया के पिरगा में आए; और यूहन्ना उन्हें छोड़कर यरूशलेम को लौट गया। पिरगा से आगे बढ़कर वे पिसिदिया के अन्ताकिया में पहुंचे; और सब्त के दिन आराधनालय में जाकर बैठ गए। व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक से पढ़ने के बाद आराधनालय के सरदारों ने उनके पास कहला भेजा, "हे भाइयो, यदि लोगों के उपदेश के लिये तुम्हारे मन में कोई बात हो तो कहो।" तब पौलुस ने खड़े होकर और हाथ से संकेत करके कहा, हे इस्राएलियो, और परमेश्वर से डरनेवालो, सुनोः इन इस्राएली लोगों के परमेश्वर ने हमारे बापदादों को चुन लिया, और जब ये लोग मिस्र देश में परदेशी होकर रहते थे, तो उनकी उन्नति की; और बलवन्त भुजा से निकाल लाया। वह कोई चालीस वर्ष तक जंगल में उनकी सहता रहा, और कनान देश में सात जातियों का नाश करके उनका देश कोई साढ़े चार सौ वर्ष में इनकी मीरास में कर दिया। इसके बाद उसने शमूएल भविष्यद्वक्ता तक उनमें न्यायी ठहराए। उसके बाद उन्होंने एक राजा मांगाः तब परमेश्वर ने चालीस वर्ष के लिये बिन्यामीन के गोत्र में से एक मनुष्य अर्थात् कीश के पुत्र शाऊल को उन पर राजा ठहराया। फिर उसे अलग करके दाऊद को उनका राजा बनाया; जिसके विषय में उसने गवाही दी, 'मुझे एक मनुष्य, यिशै का पुत्र दाऊद, मेरे मन के अनुसार मिल गया है; वही मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा।'"

वे नैतिक और प्राकृतिक बुराई में अन्तर नहीं कर पाते हैं।

2) वे हमारे और प्रभु यीशु के मध्य संबन्ध विच्छेद को नहीं समझ पाते हैं। आंधी और लहरों से बात करना, लोगों से कहना खड़े हो और जीएं, मछली के पेट से सिक्का निकालना, स्वर्ग से भोजना उतारना आदि उसके बेजोड़ कार्य थे। वे रोगमुक्ति द्वारा अपनी पहचान प्रकट कर रहा था। वह हमें आशा नहीं देता कि दुष्टात्माएं निकालें। वह सुसमाचार, मन फिराव, विश्वास और प्रेम का प्रचार करता था। उसने दुष्टात्मा निवारण की शिक्षा नहीं दी है। उसका बल मन फिराव और विश्वास पर था।

इस कारण मैं प्रेतमुक्ति सेवा के प्रति दो सावधानियां आपके सामने रखता हूं।

1) धर्मशास्त्र में इस सेवा की आज्ञा नहीं है। इसकी अपेक्षा परमेश्वर के वचन के प्रचार द्वारा मनुष्यों के पापों से मन फिराने और मसीह को ग्रहण करने और विश्वास लाने की अनेक आज्ञाएं हैं। प्रेतमुक्ति सेवा के पक्ष में

केवल मरकुस 16 है परन्तु यह बड़े विवाद का विषय है। पुराने नियम के पवित्र जनों, प्रभु यीशु, नये नियम की कलीसिया सब का एक ही काम था, पापों से मन फिराव और मसीह को ग्रहण करना। प्रेतमुक्ति वास्तव में अन्यजाति अभ्यास था।

2) हमें धर्मशास्त्र के अनुसरण पर ध्यान देना है। इसका अर्थ यह नहीं कि दुष्टात्माएं नहीं हैं या वे मनुष्यों में नहीं समातीं परन्तु धर्मशास्त्र में इसकी आज्ञा नहीं हैं।

हमें धर्मशास्त्र की बात पर ध्यान देना है– व्यक्तिगत उत्तरदायित्व पर, विशेष करके नैतिक बुराई के विषय। परामर्शदाता के अनुसार रोगियों को संसार का सर्वोत्तम एवं मृदुभावी मनुष्य कहते हैं जिन्हें दुष्टात्मा कष्ट देती है जब कि समस्या हमारे ही में है कि हम क्रोध करते हैं, घमण्ड करते हैं। हमें अपने मन को बदलना है। पाप का दायित्व मनुष्यों पर से हटाकर हम सुसमाचार के महत्व को कम कर देते हैं।

बाइबल शैतान का उल्लेख किए बिना हमारे उत्तरदायित्व की चर्चा करती है परन्तु हमारे उत्तरदायित्व के बिना शैतान की चर्चा नहीं करती है।